दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 07.10.2025

प्रकाशनार्थ

दिनांक 07.10.2025 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर द्वारा आयोजित एवं भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित **भारत अमेरिका सम्बन्ध : समकालीन परिप्रेक्ष्य** विषयक **दो दिवसीय राष्ट्रीय-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में प्राप्त हुए शोध–पत्रों का संकलन के रूप में प्रकाशित दो पुस्तकों– भारत अमेरिका सम्बन्ध : समकालीन परिप्रेक्ष्य, इण्डो–यू.एस.रिलेशन्स : ए.कन्टेम्परेरी पर्सपेक्टिव** का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. राजीव कुमार, पूर्व अधिष्ठाता महात्मा गॉधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार ने कहा कि भारत–अमेरिका संबंध आज के वैश्विक परिदृश्य में सामरिक, आर्थिक और तकनीकी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अमेरिका स्वयं को विश्व नेतृत्व की भूमिका में देखता है, जबकि भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति और राष्ट्रीय हितों के आधार पर आगे बढ़ना चाहता है। यही स्वतंत्रता दोनों देशों के बीच कभी–कभी मतभेदों का कारण बनती है। अमेरिका की प्रवृत्ति संसाधनों और तकनीकी प्रभुत्व के माध्यम से वैश्विक प्रभाव बनाए रखने की रही है, जबकि भारत आत्मनिर्भर विकास पर बल देता है। चीन ने अमेरिकी तकनीकों की नकल कर विकास पाया, पर भारत ने अपनी मौलिक क्षमताओं से प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष और रक्षा के क्षेत्रों में मजबूत स्थान बनाया है। आज भारत न केवल विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में है, बल्कि लोकतंत्र, मानव मूल्यों और सामरिक संतुलन का भी संवाहक है। अमेरिका चाहता है कि भारत उसकी नीतियों का अनुसरण करे, परंतु भारत रणनीतिक स्वायत्तता सिद्धांत पर अडिग रहते हुए सहयोग और स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाए हुए है। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत को वैश्विक राजनीति में प्रभावशाली बनाता है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेश सिंह, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि वैश्विक राजनीति के बदलते परिदृश्य में अमेरिका की विदेश नीति निरंतर पुनर्गठन की प्रक्रिया से गुजर रही है। शीत युद्धोत्तर युग में अमेरिका ने जो वैश्विक नेतृत्व स्थापित किया था, वह आज नई वैश्विक शक्तियों के उदय, विशेषकर चीन और भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं के कारण चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसे में अमेरिका की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों की रक्षा करना तथा वैश्विक संतुलन को अपने अनुकूल बनाए रखना है। अमेरिका की वर्तमान विदेश नीति उसके घरेलू आर्थिक और राजनीतिक हितों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी है। आंतरिक स्तर पर रोजगार, औद्योगिक पुनर्जीवन, ऊर्जा सुरक्षा और सैन्य–तकनीकी श्रेष्ठता बनाए रखना उसके प्रमुख लक्ष्य हैं। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अमेरिका अपने रणनीतिक साझेदारों के साथ संबंधों को सुदृढ़ कर रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत–अमेरिका संबंध आज 21वीं सदी की निर्णायक भागीदारी के रूप में विकसित हुए हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग के क्षेत्र रक्षा, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, व्यापार, और इंडो–पैसिफिक सुरक्षा ढांचे तक विस्तृत हैं।समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारत–अमेरिका संबंध केवल रणनीतिक भागीदारी तक सीमित नहीं रहे, बल्कि साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, मुक्त बाजार व्यवस्था, और नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की संरक्षण भावना में भी निहित हैं। अमेरिका भारत को चीन की बढ़ती शक्ति के संतुलन के रूप में देखता है, जबकि भारत अपनी वैश्विक स्थिति को मजबूत करने के लिए अमेरिका के साथ सहयोग को रणनीतिक पूंजी के रूप में ग्रहण करता है। इस प्रकार, अमेरिका की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों की अभिव्यक्ति है, और भारत के साथ उसके संबंध उस नयी वैश्विक व्यवस्था की दिशा सूचित करते हैं, जिसमें शक्ति का संतुलन बहुध्रुवीय होता जा रहा है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. महेन्द्र कुमार सिंह, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत–अमेरिका संबंध वर्तमान में एक जटिल संक्रमणकाल से गुजर रहे हैं, जहाँ सहयोग और प्रतिस्पर्धा समानांतर रूप से उपस्थित हैं। ट्रंप 2.0 युग में अमेरिका फर्स्ट नीति ने इन संबंधों को पुनः परिभाषित किया है। व्यापारिक मतभेद, टैरिफ विवाद और एच.1बी. वीज़ा नीति में कठोरता ने आर्थिक साझेदारी में तनाव उत्पन्न किया है; वहीं, आई.सी.इ.टी. पहल, रक्षा सहयोग तथा तकनीकी हस्तांतरण जैसे क्षेत्र इस संबंध की मज़बूत नींव बने हुए हैं। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता नीति अब भी इसकी कूटनीतिक दिशा का मूल है, जिसके माध्यम से वह अमेरिका–चीन शक्ति प्रतिद्वंद्विता के बीच संतुलन बनाए रखता है। ऊर्जा सहयोग में रूस पर निर्भरता और अमेरिकी अपेक्षाएँ परस्पर विरोधी हैं, जबकि परमाणु समझौते की अपूर्ण संभावनाएँ अब भी

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

प्रतीक्षा में हैं। भू–राजनीतिक रूप से, भारत बहु–संरेखण विदेश नीति माध्यम से विभिन्न शक्ति केंद्रों से व्यवहारिक सहयोग साधने का प्रयास कर रहा है। अंततः, इस साझेदारी की स्थायित्व का आधार भावनाओं से अधिक यथार्थ, पारस्परिक सम्मान और दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टि पर निर्भर करेगा। भारत अब किसी गुट का अंग नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व में एक स्वायत्त और निर्णायक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

संगोष्ठी निदेशक, प्रो. ओम प्रकाश सिंह प्राचार्य, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि वर्तमान युग में ज्ञान का आधुनिक स्वरूप सूचना के रूप में परिवर्तित हो चुका है, जिससे उस पर एकाधिकार बनाए रखना कठिन होता जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में अपनी प्रासंगिकता और स्वतंत्र पहचान बनाये रखना भी एक जटिल चुनौती है। इसी परिवर्तित वैश्विक परिवेश में भारत और अमेरिका जैसे दो विशाल लोकतंत्रों का सहयोग विशेष महत्व रखता है। अमेरिका जहां गुट–आधारित नीतियों के माध्यम से अपने वैश्विक हितों को आगे बढ़ाता है, वहीं भारत परंपरागत रूप से गुट–निरपेक्षता की नीति पर बल देता आया है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारत का दृष्टिकोण संतुलित है। वह साम्यवादी नीतियों की तरह सार्वजनिक क्षेत्र को सुदृढ़ बनाते हुए निजी क्षेत्र को भी अवसर प्रदान करता है। यही मिश्रित दृष्टिकोण भारत को न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करता है, बल्कि उसे वैश्विक शक्तियों, विशेषकर अमेरिका, के साथ समानता और साझेदारी के स्तर पर संवाद करने में सक्षम बनाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रो. पूनम टण्डन, कुलपति, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध यह महाविद्यालय भी बराबर सक्रियता निभाते हुए संगोष्ठी आयोजित कर रहा है। जो कि शिक्षा व शोध की गुणवत्ता बढ़ाने में अहम भूमिका है। भारत अमेरिका में कोई सैद्धान्तिक मतभेद नही है बल्कि सब कुछ आर्थिक हितों की अभिवृद्धि करना है। भारत की अर्थव्यवस्था अब दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बन रही है यह बात अमेरिका को खटक रहा है। भारत का सम्बन्ध पूरक बनने पर आधारित है जब कि अन्य देशों के रिश्ते अर्थ आधारित है।

कार्यक्रम में भारतीय वैश्विक परिषद, (आई.सी.डब्ल्यू.ए.), नई दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में श्री एफ.आर.सिद्दीकी ने कहा कि वर्तमान समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा है। दुनिया में आ रहे इस बदलाव के बीच राजनीति का अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतीय वैश्विक परिषद भारत सरकार के शोध व नवाचार की विचारधारा को बढ़ावा देने हेतु इस प्रकार की संगोष्ठियों के आयोजन पर बल देता है जिससे विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं व शिक्षकों में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का समझ विकसित हो सके।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की प्रस्ताविकी संयोजक, डॉ. इन्द्रेश कुमार, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग ने प्रस्तुत एवं **संचालन डॉ. त्रिभुवन मिश्रा** ने किया। उक्त अवसर पर प्रो. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. अविनाश सिंह, डॉ. प्रवीन कुमार सिंह, प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, प्रो. परीक्षित सिंह, प्रो. अर्चना सिंह, प्रो. शुभ्रा श्रीवास्तव, प्रो. अरूण तिवारी, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. कौशल सिंह, महाविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्वतजन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तकनीकी सत्रों की **अध्यक्षता प्रो. ममता मणि त्रिपाठी,** प्राचार्य उदित नारायण पी.जी. कालेज, पड़रौना कुशीनगर, **मुख्य अतिथि प्रो. विनोद कुमार पाल,** प्राचार्य, दी.द.उ. राजकीय महाविद्यालय, सहजनवा व **विशिष्ट अतिथि प्रो. अनिल कुमार सिंह** प्राचार्य, महात्मा गॉधी पी.जी.कालेज, गोरखपुर ने किया। तकनीकी सत्रों में **कुल 56 ऑफलाइन एवं 17 ऑनलाइन शोध–पत्रों का वाचन** किया गया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क